IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 6, June 2025 Impact Factor: 7.67

जनजातीय खेतीहर महिला श्रमिकों की समस्याओं का अध्ययन (मध्यप्रदेश के धार जिले के विशेष संदर्भ में)

लोकेन्द्रसिंह रावत
शोधार्थी
अर्थशास्त्र विभाग

डॉ. सुधा पाण्डेय
शोध निर्देशिका
सह आचार्य (अर्थशास्त्र विभाग)

माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा,

1. प्रस्तावना

खेतिहर महिला श्रमिक आज भी सबसे अधिक गरीब, पिछड़ा और शोषित वर्ग है। उनके असंगठीत एवं अकुशल होने की वजह से अभी भी इनकी आय का स्तर बहुत कम है। अभी भी उनका उपभोग स्तर बहुत कम है। 2001 से 2011 के बीच खेतिहर श्रमिक महिलाओं की संख्या में चार गुण बढ़ोतरी हुई हैं व कृषि में श्रमशक्ति में खेतिहर मजदूरों का अनुपात 2001 में 28 प्रतिशत से बढ़कर 2011 में 56 प्रतिशत हो गया है अर्थात और अधिक मजदूर परिवारों की मौद्रिक आय में वृद्धि हुई है परन्तु कीमतों में भी तेजी से वृद्रि हुई इसलिए वास्तविक मजदूरी को अपनी सामाजिक व पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाहन करना पड़ता है और उसके लिए उन्हें साहूकारों व महाजनों से ऋण लेना पड़ता है और उसके लिए उन्हें साहूकारों व महाजनों से ऋण लेना पड़ता है। महाजन ऊंची ब्याज दर भी लेते है व इनका कई प्रकार से शोषण करते है। सभी व बालश्रमिकों को भी सामान्य से कम मजदूरी दी जाती है व उनसे काम भी अधिक लिया जाता है। इसके अलावा, श्रम–शक्ति में लगे हुए बच्चे अशिक्षित रह जाते हैं जिससे उनसे प्राप्त होने वाली भविष्य में संभावित आय भी कम हो जाती है। इनकी निम्न सामाजिक स्थिति होने के कारण बड़े–बड़े भू–स्वामी इनसे दासों की तरह काम लेते हैं व नाममात्र की पगार पर इनसे बेगार ली जाती है। भूमिहीन किसान महिला प्रायः कच्चे मकान व झोपड़ियों में रहने के लिए विवश होते हैं एक या दो कमरों में अनेक व्यक्तियों के रहने से इनकी नैतिक एवं सामाजिक मर्यादा समाप्त हो जाती है। दूर–दूर तक गांव व क्षेत्रों में बिखरे होने के कारण तथा पारस्परिक संगठन की कमी की वजह से ये भू–स्वामियों से अपनी मजदूरी के संबंध में सौदा करने में असमर्थ होते है। इसके अतिरिक्त कृषि क्षेत्र में मशीनों का प्रयोग बढ़ने की वजह से भी अशिक्षित कृषि श्रमिकों में भारी मात्रा में बेरोजगारी बढ़ रही है जो एक गंभीर समस्या का रूप धारण कर रही है।

भारतीय जीवन दर्शन में नारी को शक्ति का पर्याय माना गया है। इसलिए इसे नारी शक्ति कहा जाता हैं। महिला की शक्ति से परिवार और समाज की रचना होती है। सृजन और पोषण उनके नैसर्गिक दायित्व है। हमारे समाज में महिलाएँ एवं पुरूष दोनों ही भारतीय समाज के अभिन्न अंग माने जाते है। पुरूष वर्ग तथा महिला वर्ग दोनों ही श्रम शक्ति प्रतीक माने जाते है। दोनों के कार्य करने की दशाएँ भिन्न–भिन्न स्थितियों में भिन्न–भिन्न होती है। कृषक वर्ग के पुरूष खेती में कठिन एवं मेहनती कार्य करते थे तथा महिलाएँ भी खेती में हल्के–फुल्के कार्य सम्पन्न करती थी। यही से महिला कृषि श्रम की उत्पत्ति मानी जा सकती है, जो आगे चलकर एक बड़ी श्रम शक्ति के रूप में दृष्टिगोचर होती है। भारतीय अर्थव्यवस्था की कृषि प्रधानता होने के कारण जनजाति समुदाय के लोग वर्ष में लगभग 04 से 06 माह तक कृषि एवं उससे संबंधित सहायक कार्यो जैसे–पशुपालन, बागवानी, मुर्गीपालन, मत्स्यपालन, आदि में संलग्न रहते है। देश की कुल जनजाति जनसंख्या में से लगभग 40 प्रतिशत जनसंख्या कृषि में कार्य में संलग्न है। जिन लोगों के पास छोटे खेत है या खेत नहीं है, वे लोग बड़े–बड़े किसानों के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 6, June 2025 Impact Factor: 7.67

घर उनकी कृषि में मजदूरी करके परिवार का पालन–पोषण करते है। यह कार्य वे लोग जन्मजात ही सीख लेते हैं। कृषि कार्य में जितना योगदान पुरूषों का होता हैं उतना ही महिलाओं का भी होता हैं। दोनों के सहयोग से ही भारत एक कृषि प्रधान देश बना है।